

1. गुम्म भेल ठाढ़ी गोपेश
2. बलचनमा - यश्री

MAITHILI

गुम्म भेल ठाढ़ी छी

Mai
891-431 (mai)
GoP

रचयिता
श्री गोपालजी भा 'गोपेश'



प्रकाशक
तुलसी परिवार
काजीपुर, पटना-४

दाम — एक टाका मात्र

प्रकाशक

बृद्धा परिवान

पहिल लेख

काजीपुर, पटना-४

सर्वाधिकार

कविक अर्पित

मुद्रक

आदर्श प्रेस

पटना-४

आहे माहे

अनुभूति हो वा अभिव्यक्ति मौलिकताक दानी केओ नहि कए सकैछ । कोनो स्तर पर नहि । जीवन मे की नव धिक आ की पुरान, तकरो निरूप करब कठिन । सत्यक बिला पर इतिहासो बसाइत बसाइत विकृत भए जाइछ । जानि नहि भिनुसर ओ सौम्य आवर्तन मे कतेक प्रत्यावर्तन छैक । परन्तु एतेक धरि सत्य जे समयक पएर तर जे दबि गेल से 'पुरान' कीक श्रा' जेकर प्रतिबल बसाते नहि बहए से 'नव' । एहि संग्रह मे युगधर्म ओ स्थानीय रंगक निखार कहाँ धरि उतरल अछि तकर निरूप करवाक अधिकार अपनहि केँ अछि । हमर पहिल कविता-संग्रह 'सोनदाइक चिट्ठी' जहिआ बहराएल तहिआ मैथिली जगत मे ओकर रंग विरंगक टिप्पणी भेल, तकर उल्लेख करब एतए प्रयोजनीय नहि हुमना जाइछ । मुदा, अपन पहिल संग्रह सँ हम पूर्ण सन्तुष्ट छलहुँ श्रा' पाठक लोकनि मे जो ततेक लोक-मिथ छिद्र भेल जे उल्लेखित भऽ, कए आइ दोसरो संग्रह दए रहल छी ।

आदरणीय प्रोफेसर श्री हरिमोहन झा जी केँ हम साहित्य-प्रणयनक क्षेत्र मे अपन दिशा-निर्देशक मानैत छियेनि । तेँ हुनका सँ उद्घरण नहि भए सकैत छी । कविताक शब्द-योजना मे अपन एहिणी अमूर्ती प्रभावती का, जी० ए० आनर्स सँ बहुत सुभाओ भेटल अछि । मुदा हुनका की धन्यवाद दिऐनि ? आवरण शिल्पी श्री प्रशान्त केँ सेहो नहि बिसर सकैत छियेनि जे

एतेक कार्य व्यस्तता रहितहुँ पूर्ण तत्परता देख प्रेमनिहि । बन्धुवर श्री कैलाश प्रसाद सिंह (पटना हाईकोर्ट) तथा श्री इन्द्रकांत झा (कार्यालय सचिव) चेतना समिति) एहि संघ के छपवा लेल सदिलन टोकारा दैत रहलाह ते हिनकहुँ प्रति अपन आभार प्रकट करैत छी । अन्त मे दुहा परिवार माइनजन श्री अर्जुन ठाकुर केँ धन्यवाद दैत छियेनिहे जे मैथिली प्रकाश दिशि प्रगाढ़ अनुराग देखओलनिहे अछि । आदर्श प्रेसक स्वत्वाधिकार श्री सइदेव बाबू सेहो धन्यवादक पात्र थिकाह जे एतेक कम समय मे तत्परता पूर्वक पोथी बहार कए सकलाह ।

हरबड़ी मे जे प्रेसक जुटि रहि गेल आइ, तदथ क्षमा प्रार्थी छी ।

कार्तिक धवल त्रयोदशी

श्री गोपालजी झा 'गोपे'

विधापति स्मृति दिवस

२५-११-६६

शक: १८८८

मिथिलाक प्रतिनिधि	१
हम आ हमर युग	४
एक व्यक्तित्व : दुइ चित्र	६
प्रीलान्सर	६
युग धर्म	१२
हे कवि कोकिल आजुक युग मे अहाँ जे होइतहुँ	१४
अर्थार्थ	२०
कल्पना	२१
धिजुलिक दिमाग	
आ' यन्त्रक जाँत	२२
भारतक भाटि सँ	२३
सोनदाइक नव चिट्ठी	२४
उपलब्धि	२६
मनुक्खक अस्तित्व	३१
टहाटही इजोरिआ मे	३२
शौर्य मे ककरो सँ बनैस नहि	३३
जवान केँ सम्बोधित गृहिणीक दू आखर	३४
प्रयोगवादी गमछा	३७
हिलकोर	३८
जय जवान जय किसान	४०
युगबोध	४१
बाह्र वर्षक बाद सासुरक यात्रा	४६
गुम्म भेल ठाढ़ छी	४८

समर्पण



प्रो० श्री अनिरुद्ध भा एम० ए०
दर्शन विभाग, परदा विश्वविद्यालय

विमल कीर्ति जगन्नाथ परमल अवि
विद्या बुद्धि अपार
अपित हो अमजक चरण मे
अनुजक ई उपहार

—'गोपेश'

मिथिलाक प्रतिनिधि

ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहि देश केर साटि पानि मे नव तीरम छइ
जाहिठाम हैनइत अछि परती खल खल खल खल
जाहिठाम नयनागिराम होइछ जइकाला
जाहिठाम शाइल पर चनकर मोती सन सन पाला
जाहि देश मे लहलहाइत अछि दोलछिक गम्हड़ा
जाहिठाम अगणित प्रसून पर खुबधर मम्हड़ा
जाहिठाम कमलाक धार मे कुदकर मारा मोटी
अनूपुषा भरखन्दि जत कहिओ धर धर कोटी
काँशिकीक जल करइत रहइछ कलकल जतए निनाद
जाहि मुनि केँ भेल न कहिओ रचहुमान विपाद
जाहि देश मे प्रकृति नचइ अछि सँदिलन छम छम छन छन
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहिठाम पाओल जाइछ डोका सन मुनर ओलि
फइकइवए लगमान जाहिठोँ तुरतातहि सँ पौलि
जाहि देश मे होइत अछि तहभारि सनक भूरेख
देखए सन आवा विचार मे अनपहरा ओ सेल
अहुनक कोटी सन दुहदुह जत नारी केर डोर
गधुर बयार बहए जई नहुँ-नहुँ रम्य जाहिठोँ भोर
जाहि देश मे अपइछ सम जय जय भोला शिवदानी

नामी जत्त बूढक बटुआ ओ बेलिक नसिदानी
 जाहिठौंकि भिक पैष धरोहरि भिरजइ साटा पाग
 कोकटिक धोती राम-गाम मे रुधिर पटुआ साम
 जाहिठाम बड़िआँ होइछ देवा बड़ास ओ सीक
 जाहि देश मे नैहर बेर कीओ लगैत अछि सीक
 जाहिठौंकि उरलेख्य पर्ष भिक बल नयोदास चौटीचान
 अट ओ जटिन तोड़ि जत्त इन्द्रहुँ केर गुमान
 जाहि भूमि सन साधुराँ नहि अछि कोनो देश ओ ठाम
 आवेली सरहोज सारि ओ सरही बलमी आग
 'मन्यं शिवं सुन्दरम्' केर जे पावन संगम थीक
 सम्रा-चकेवा भातृद्वितीया स्नेहक जटए प्रतीक
 होइत छथि नैबहि सँ लुधिरि जाहि देश केर नारि
 प्रियगर 'लगइछ जन्मानस के' जनिकर उहकन मारि
 जाहि देश मे गाओल जाइछ तिरहुति ओ समदौन
 जाहि देश मे नव विवाहिता करवाथि बहुत मनीन
 धिसरथि नहि जत्त बेर धीका सौँक तुरारी पूजव
 वैवाहिक गौरह जइठामक नहि जगैत अछि पूजव
 जाहि देश मे अहिपन तुसर ओ सीकीक चँगेरी
 जाहि देश मे बटुको होइछ बड़का मोट गँगेरी
 लग जाबित अछि जाहिठाम केर देस-कोस मे भोज
 काजतिहार होइतहि रहइछ घर आखन मे रोज
 जाहिठौंकि इतिहास अपन अछि आर दिव्य भूगोल
 जाहि देश मे सौजन्यक नहि भए सवैत अछि मोल

जाहि देश केर लोक न होइछ ककरो डेरें तकदम
 जाहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
 जाहि देश मे होइछ चहटगर मूड़ी ओ पनमान
 खोआ भरल पिरुकिआ अतुपम कोजागराक मखान
 मोटगर ब्राह्मिक दही जत्त आओर समहा बुड़ा
 अति विन्यास सँ कोइरथि गृहिणी जत्त रोहुक मूड़ा
 साखभोग केर भात मुअनगर तइ पर राइडिक दालि
 कइकइ पी तरल तिलकोरा अछि जत्त बेर चालि
 जाहि देश मे बिलहल जाइछ खिलबट्टी मे पान
 जनीं धुवारी नरि-भरि बाकुट जाहिठौंकि सम्मान
 जाहि ठाम उखलछि समाट बजैरैतहि रहइछ धम धम
 ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
 जाहिठाम प्रतिभा सबहुक भिक जन्म-सिद्ध अधिकार
 नव्य-न्याय करे दीप जरीतनि रंगेशक अवतार
 जाहि देश मे वाचस्पति ओ मंडन केर पथार
 एक-एक साधक केर जइठौं पतरल कीति अपार
 नीर-मुक्ति छथि गौरवशालिनि जनक जनिंक हरबाह
 जाहि ठाम कहिओ झलाह शास्त्रक पंडित चरबाह
 जाहिठाम एलनहुँ जोगोल अछि गप्प सभक कमठोड़
 जाहि देश केर गान्-का केर भेटए न कतहुँ जोड़
 जाहि देश मे गाछ-टाट पर अमरवेलि लतराएल
 जाहिठाम डबरहुँ मे सोभए कमलक फूल फुलाएल
 जाहिठाम जन-जन केर मुख सँ चुबइछ अमृत तदिसन
 ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम

हम

आ

हमर

युग

बुद्धि वल्लो* खेपड़त ह्री हमरा लोकनि
युग हमर आन्हर नहि
शरीर सँ पातर लकलक होइतहुँ
चिदेक हमर नांडर नहि
उपर सँ बुझि पड़ी कतेक ते अक्षरो
स्वार्थक ज्वाला ओ कटुकालिमा
आ' छल-झुझ सँ रोजित हमर परिधान
मुदा हम शिकहुँ योग्यता ओ सामर्थ्यक धरोहरि
धर्म, समाज ओ अन्धविश्वास
रहल अझि सभ दिन सँ उपदेष्टामात्र
हृदय ओ बुद्धि
कल्पना ओ बशार्थ
मिज्ञान्त ओ व्यवहार
दुहुँक दुइ घाट, दुइ घाट

(४)

(५)

हम शिकहुँ घोर बुद्धिवादी
अग्धा केँ तर्क कसौटी पर कसनिहार
अधिकार आ' कर्तव्यक प्रति सदितन अभावगत
ओ स्पुत निक युगक कान्तिदर्शी मानव
विघटित सभ्यताक मूल्य
आ' दुष्टित आराधक हेतु
चेतनाक उद्घोष
आ' सभावनाक दिव्य-स्रोत

—: ० :—

एक व्यक्तित्व :

दुह चित्र

(१)

वइसओने एक भाग अलसीसिन कुहर
आ' पजिअओने लाल दुह दुह टोर वाला रकटलैरडक किशोरी के
स्लेटी रडक तीस हजार की कार पर मोटका चुरोट धुकरत
चक्कर कटइ छथि नगरक चारु कात
कपडाक थोक व्यापारी श्री पकड़ामल भुनभुनिआँ
अरे ! के नहि जनइछन्हि हिनक नाम
अरइ छन्हि नगर भरि मे हिनके टारा धी
चलइत छन्हि हिनक चरि-चरि टा मिनेमा
आ' कतेको अस्तुत वरन मण्डार
टीसस सँ निरले दखिजन
फालखन्हि हँ विलैतक उतार पर हाल हे मे भव्य होटल
स्वदेश ओ परदेश समटा छन्हि रहल-लेहल
कलकत्ता, बम्बई, पेरिस ओ निवटवरलैरड
आजुक गौतिकादी युग मे
इएह बिका बका, बिपु ओ महेशक प्रतीक
आ' इएह बिका सम्य मानव
ज्ञान-गुरु गरिमा मण्डित

(६)

(७)

हिनक व्यक्तित्वक सोझें

नतमरतक कोनो पण्डित

वइसओने एक भाग अलसीसिन कुहर

आ' पजिअओने लाल दुह दुह टोर वाला रकटलैरडक किशोरी के

स्लेटीरंगक तीस हजार की कार पर मोटका चुरोट धुकरत

चक्कर कटइ छथि नगरक चारु कात

कपडाक थोक व्यापारी श्री पकड़ामल भुनभुनिआँ

(२)

धन्य बिका सेवक जी

कहाँ आ' दधीचि सन जनिक आदर्श व्यक्तित्व

गांधी बाबाक जे पक्का ऋतुगामी

गीताक अटारहो अध्याय जनिका जीहे पर

"अहंकारं बलं दयं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।

विदुष्य निर्ममः शान्तो शक्तभूयाय कल्पते ॥"

लोक सेवा जनिक जीवनक पुनीत ध्येय

जनताक किलास मे जे रेल पर बइठत छथि

आ अगवे जे सर्वोदयक राहरि दरइइ छथि

अपार जन सङ्घ जनिक उत्साहवर्जक भाषण सुनि

अगिला चुनाओ मे जितएवा लए आकुल अछि

धन्य बिका त्यागी, तपस्वी ओ मनस्वी व्यक्ति

हृदय परिवर्तन जनिक कालहए सन भेल अछि

केओ वजैइ इएह बाँक चाएवयक कुटनीति

(०)

केलो बज्र इह भोक् आयुक्ता राजनीति
जकरा जे मोन होउ ते नाव भो मुदा
ओ तँ भिका जननायक
छवि न आव बनिसौ
बदाश्रित रेशमीक बनिआनि पर लहरक कुत्ता
श्री पकौड़ीमल भुनभुनिसौ

— ० —

फ्रीलान्सर

भार सँ निरले दखिन
बेस अकाए बोन छइ
आ' बिन्वहि में स्थित छइ
शिव लिङ्गत् प्रतर खण्ड
बुढ़वा तारक भोक् सँ
चुपइत छइ बुन्ने बुन्न
स्फूर्तिदायक गौराक रस
आ' भोग खराइ छन्हि शिवजी केँ
आमोदयोगक चहटगर टोनिक
पुरिष पञ्चश लोटइ अङ्घ्रि-शिलाखण्ड पर
सौंभ परात
ओ रङ्ग विरंगक गर्द सँ
बाधाक स्वागत करइत अङ्घ्रि
आ' बड़बड़ अङ्घ्रि हुनक डाली मे
अधजस्तुआ बीड़ीक दुकड़ी
खड़इल सलाइक काटी
कोनो निराश प्रेमीक डायरीक पन्ना
हॉलीउड तारिकाक नेल पालिकाक खप्पी
(६)

(१०)

लिपस्टिकक ठुई ठुकड़ी
खतन्त्र उमेदवारक जन्मा पहिरने

भोट में डाढ़ कोनो पार्टीक विस्तृ-
कार्यकर्ताक एलेक्शन पोस्टर

आ' दुरगमविश्रों कनिश्रोंक लोईइ महक
इईया धूमिधान

जुटितहि रहइछ ओतए
निकनिकिआ कालेज छात्र छात्राकबहुरंगी दल
जेआ कोनो तीर्थस्थल पर
भक्त जन जुटइत हो

साइत अछि
पिबइत अछि

गरि पेट
भरि पोख

आ' चढ़इ छन्हि औइर दानी बूढ़ा केँ
सेँइविन टोस्ट

ओ' मार्टन टोफी
आ' बकर बकर बाबा लकितहि रहइत छथि

मक्खन जीवनक पैण्ट
बाइलनक बुस सर्ट

रेसमी सलवार
जालीदार कर्ता

(११)

हवाइ चपल
आगफा कैमरा

आ' धर्मस लटकओने
प्रज्ञा परिणत मनुपन्तानक दुलकी चालि

बाबा श्रीलान्तर छथि
तेँ नहि छन्हि मन्दिर

आ' नियमित रूपेँ
सहर में कार नोगो

नहि लगइत छन्हि
श्रीलान्तर गावहिक

इएह थीक दिव्य लक्ष्य
फलू नदी जेकाँ अन्तः सलिल प्रवाह

ओ मुक्त हास-परिहास
तेँ मनुष्यक स्व-उन्नता केँ

कक्ष जा सकैछ जीवनक चरम उत्कर्ष
शंकरक महिमा

ऐतिहासिक गरिमा
आ' व्यापक शिखरतन

युग धर्म

लोक हम बनसपति-युगक
 कोनो देश
 कोनो शान्त
 उपमा नहि ज्ञानदाग
 साइत छी विरकुट
 आ' विवशत छी गरम चाह
 कोइआ सैं नापि-नापि
 सैत छी सुगन्धित मेल
 ठारइ छी गगन पर लोठाक लोटा पानि
 रगवइ छी ताबुन पर साधुन
 बनएवा लए शान्ति
 आ' पएवा लए शान्ति
 मधलन जानिक पैर पर सैं
 चढ़वइ छी मनीला
 पहिरइ छी हवाइ चप्पल
 करइत छी लीला
 नीक जेकों धोलने छी
 काथक सिद्धान्त सार
 पइसइ छी अपेक्षन मे निर्धोखि

कीलि हम चेतन द्वार
 विश्लेषण करइत छी
 युग-युग सैं मोतिआएल दमित इच्छाक
 तृष्णाक ज्वाला मे
 छार करल अन्तरक अद्वि
 आ' धोरि लेल
 गरल फटीत आडम्बर मे
 अपन बहचरि हाथक अँतरी के

हे कवि कोकिल आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुं (लेखक)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुं
प्रयोगवादी रचना करितहुं
अपनहि लिखितहुं
अपनहि सुनितहुं
रीन काहि पोथी छपवितहुं
आलोचक केँ देखितहि मगितहुं
सुह कोचिआ केँ गप लड़ बितहुं
बात-बात मे टाड़ अड़वितहुं
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुं

(गीतकार)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुं
मकखन जीतक फूल पैट पर
(१४)

(१५)

नाइलन केर बुतसट चढ़वितहुं
हवाइ चपल धारण कर
सोभे बन्दई केर टिकट कटवितहुं
लूच चहटगर रतगर फिली शाना लिखितहुं
लता आर गीता केर कंठहार धनि जइतहुं
फिलिमजगत मे नाम कमवितहुं
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुं

(छी के टार)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुं
बाहुक डिकेदार भ' जइतहुं
अन्नक बड़का गोला फोलितहुं
नव विजाइनक पर चगा कर
तनहुक तन रेडिओ धुधुअवितहुं
लहना छार लगेदा करितहुं
टका अरजि का कुर्व कर लिखितहुं
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुं

(१६)

(इंजीनियर)

हे कविकोकिल
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ
कोनो ठाम इंजीनियर रहितहुँ
बिरफाँ में थिजुली-लए जइतहुँ
अइठ रजदी किछु नहि करितए
सरसी खगटा खेत रोपितहुँ
टेरडर में खूबे हथिअवितहुँ
नहिपँ कसनहुँ डेकार करितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ

(प्रोफेसर)

हे कविकोकिल
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ
कोनो ठाम प्रोफेसर रहितहुँ
लंदन सँ पी-एच० डी० लवितहुँ
साथ मोट इन्जिनैट एवितहुँ
सेटर ओ टेबुलेटर रहितहुँ
कतोक विषयक बोर्ड में रहितहुँ
सिनेट सिंडिकेट में रहितहुँ
एन० सी० सी० केर कैप्टन रहितहुँ

(१७)

पोथी लए सीरम में पड़ितहुँ
मीन-मेप समझम देखवितहुँ
समझारनक अधिकारी बनितहुँ
प्रिन्सिपलक दरबारी रहितहुँ
तेव अगार मुनका खइतहुँ
एलिकैटा श्री अजन्ता जइतहुँ
जगता केर किलास में बड़ितहुँ
करटक गामुल चाजँ कए शितहुँ
मोटहि सँ पलासहुँ में भसितहुँ
कौकी दए चटिआ केँ टकितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ

(डाक्टर)

हे कविकोकिल
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ
एफ० आर० सी० एत० डाक्टर रहितहुँ
अओ सए टाका मित्य कमबितहुँ
सीस-याचना में नहि चुकितहुँ
कुकुर जेकाँ रोगी पर मुकितहुँ
सदियत भूह बनओने रहितहुँ
कंडलंगोट चढओने रहितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ

(१०)

(वकील)

हे कविकीकिल
 आजुक युग मे अहाँ जै होइतहुँ
 हाइकोर्ट मे प्रैक्टिस करितहुँ
 नहि बलि सकितए खेचो खरचा
 गुह विधुअओने भलित हि रहितहुँ
 गाउन मे चोपरी सटववितहुँ
 मूजक कली कोट मे सोमितहुँ
 गुआकिलक असरा मे रहितहुँ
 हे कविकीकिल
 आजुक युग मे अहाँ जै होइतहुँ

(अफसर)

हे कविकीकिल
 आजुक युग मे अहाँ जै होइतहुँ
 कोनो विभागक अफसर रहितहुँ
 निश्चय आई० ए० एस० भए जइतहुँ
 लिपिकवर्ग पर रज्ज समवितहुँ
 चरमहि तर सँ आँखि गुइरितहुँ
 फनफेरेंस, सेमिनार मे जइतहुँ
 टी० ए० सँ कोठी केँ भरितहुँ

(११)

तीस हजारी कार कीनितहुँ
 श्रीमती सऊ चक्कर कटितहुँ
 हे कविकीकिल
 आजुक युग मे अहाँ जै होइतहुँ

(नेता)

हे कविकीकिल
 आजुक युग मे अहाँ जै होइतहुँ
 मिरजइ छोपडा पाग छाड़ि
 नेता केर समटा इंस बनितहुँ
 पीड़ा पावक खिलती खइतहुँ
 सविस्मरण पटना दिल्ली जइतहुँ
 सम निषेध पर भाषण करितहुँ
 बहुते ठाँ उद्घाटन करितहुँ
 हे कविकीकिल
 आजुक युग मे अहाँ जै होइतहुँ

मथुरा

[एक]

हमरा घर लग रहइछ एकटा
ताडि बरष केर बूझा
मुनए मन उज्जर छइ ओकर फेस
झैक डेराओग ओलि
मसखि गेल छइ दौत
कोटकि गेल छइ गाल
मुदा न ककरो बुझि पड़इ छइ
ओकर असल उमेर
नकली रड सँ रखल समटा फेस
रडल टिप्पल नइ
गृह मे लागल सुनार दौतक सेट
काजर कएल ओलि
फेति नेने अछि पाउडर सँ ओ गाल
प्रेम-प्रणय सँ रहइछ सदिलन कात
उज्जर दप दप छैक छिक शिलक केर नुआ
आओर करिआ आओ
बात बात मे छिटकावैछ वतीसी
जेना कोनो हो शुज पोइसी
रूतवती मुकुमारि

(२०)

कल्पना

[२]

हुनका घर लग रहइछ एकटा
बंस बरष केर वाला
कान्ति जकर छइ दिव्य
सेव सनक छइ गाल
डोका सन-सग ओलि
खड सनक झुरल
दाडिम सन-सन दौत
ओ छिदिआएल फेस
मुदा न ककरो बुझि पड़इ छइ
ओकर असल उमेर
कौन वयस मे
पैसल लेलक बकाए
घरक थिकि गिरवाइनि
बनव टनव नहि ओकरा छैक पसिन्न
बुद्धि केवौ ओ बाकए गहि-नाडि
सगटा सोमल बात
पहिरए मोटका ननगिलाउ केर साड़ी
आडिक छैक न दाट
नहि ओकरा जीवन सँ किछुओ मोह
जानि न कसन गृह देति ओ बानि
लाकरक अपमान
थिक ई विधिक विधान

(२१)

विज्ञानिक दिमाग

आ' यन्त्रक जाँत

विज्ञानिक आधुनिक दिमाग में
 होइछ गणितक कठिन तँ कठिन प्रश्नक समाधान
 खेलल जाइछ शतरंजक खेल
 आ' ग्राओल जाइछ गीत
 पौचल जाइछ धाराप्रवाह
 सत्यनारायणक कथा ओ वेदमन्त्र
 आ' संचालित होइछ सासगतंत्र
 लन्दनक छव्वीस वर्षीय इंजिनियर
 नक्षत्रिक कमयुटरक निर्माण कर
 फोर्लि देल युग युग में मूलत आँखि
 आ' काटि देल कल्पनाक मौखि
 अपने हम पाइँ छी
 छति हगर आगौं अछि
 सोझौं मे लक्ष नहि
 जेग मुदा ससरल जाइछ
 देखि लिअ आधुनिक विज्ञानक उपलब्धि
 आ' वनपेट मनुख केँ रॉकेट उड़वैत
 आ' राहुड़िक दालि जेकाँ यन्त्रक जाँत मे दइरैत
 नैतिकता, आस्था ओ अध्वारम केँ

भारतक

माटि सँ

अन्य भारतक माटि,
 होइत छीक एते लतखुरदगि
 युग-युग में मूलत ब्रह्म तैओ
 तुरतेल दऽकाग
 तोहर वक्ष पर टहलि रहल बहु
 रंगेजक सन्तान
 डोल नगाड़ा बाजि रहल ब्रह्म
 तीब्रह आवहुँ नीन
 फोखह शिवक बिनेत्र आ देखह
 चढ़ल अने बहु चीन
 बनितहु आव न अगटओने
 नहि चुनतहु केओ मधुगान
 रषए राइ बौर तांडव मरतंग
 बहु देशक आह्वान
 मानि लैह हे माटि

(चीनी आक्रमण काल मे रचित)

सोन दाइक

नव चिट्ठी

हम करइत की नितदिन परेड
नलबइ की बन्तुक सौंभ-यात
देशक खातिर मरि जैव मुदा;
नहि बटए देवे बीनीक खात
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

गौधी बिकाइ आदर्यो महर
मगवान् बुद्ध केर अक्षेकोल
नहि बाँति सक्त वनप्रभृतीअस
बीनी सचहिक अति कुद्र गोन
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

हल्दी घाटी केर आंगण सँ
बहइछ हिंगगिरि पर नय बजार
भौतिक शान्ति केर वीरताक
मुनयस गाथा जोगाक धार

(२५)

(२५)

से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

लक्ष्मण रेखा नहि लाँचि सकल
मद सँ प्रगल्भ लौकगरेस
ई मैकमेहन थिक तेह रेख
जे पार करत नए जैत शेव
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

विस्तारवाद नहि नीति हमर
भारत सम दिन सँ अछि उदार
“हिन्दी-बीनी भाई-भाई”
छल डोगसान चीनक प्रचार
नहि करतइ केओ परतीत ओकर
जकरा नहि कनिओ छैक शील
सहितक आगौं वेणुक अबाज
तेहिना ओकरा लए पंचशील
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

लगतैक संहन्ता करारा मे
 जे देखत हंगर प्रजातं मे
 आघार जरूर बन्युत्वपूर्ण
 ओ राख अहिमा मूलमन्त्र
 एहि त्यक्ता केर रक्षा लग
 सर्वगत हंगर कए देन दान
 हाही बिरवा किछु कर न सकत
 हम डाहि देन शत्रुक गुगान
 से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
 राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
 एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

इतिहास लिखल स्वर्गोत्तर से
 होलिअर किहू केर नाम अमर
 नायक मुंशी सन वीर सँ जतए
 जे आत्म-विसर्जन करल समर
 भारत देशक सैनिक बल पर
 अछि हमरा सगकेँ बड़ गुगान
 अनुशासन-प्रिय अछि जतए लोक
 तकनहुँ नहि जोड़ा जकर आन
 से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
 राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
 एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

देशक लातिरे उत्सर्ग करल
 युग सँ जोगौल मट्टरभाला
 औठी, वाली ओ नकमुन्नी
 आ' चारि गरिक कटगर बाला
 थिक अल्प वक्त एक अनुष्ठान
 नहि बहि कर एहि सँ दान-पुण्य
 जे नहि परवाहि करए देशक
 से महामूर्ख थिक बुद्धि-शून्य
 से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
 राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
 एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

मोटर हौकन हम सीसि लेल
 थिक टाइम करव बड़ सोभकाज
 मलहम-मट्टी पहिनहि सीखल
 समहारि लेन आभिसक काज
 से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
 राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
 एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

अनतीसौं मेल छथि एहिठाम
 नायडू सरोजिनी सनक नारि
 हुनका लोकनिक आदर्श कतए
 ओ पाबि सकत पेकिङ्क नारि

से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

बारह नम्बरक सलाइ अहाँ
पटना सँ किनि जे पठाइल
तैअर कएल नव-नव डिजाइन
स्वेटर मीया पलटनक लेल
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

चीनी कट कैश छुहन्नरिसन
मुह मे नहि एकी रती पानि
धोपल-धोपल उसनल स्वरूप
नहि सुन्दरता मे कतहु मानि
भारत सौंदर्यक ज्ञान थीक
नहि परतए एकर कृतज्ञान
कश्मीर सेध सन गाल जतए
आ मुख लगइत अछि दुर्लभान
अइलक कोही सन ठौर जतए
तइपर कस्तनहुँ भुरकीक रेख
सन दृश्य जतए नयनामिसाम

आ तरुआइरि सन भौह-रेख
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।
(चीनी आक्रमण काल मे रचित)

— ० —

उपलब्धि

हातिखन—

कतहु तँ हेको हेकोक आवाज
कविगोष्ठी मे आएल छल
रसास्वादन जकर कएल कुएटा-भरत प्रबुद्ध ओता लोकनि
—आ' कविगोष्ठीक अभ्यक्ष महोदय

भोरखन—

लभिक रोज दैत छलाह
रवाय-विज्ञानक गोर पारियेक बेचा
संगहि गोर दतेक छुहन्नरि छुहन्नरि
आ' कोनो बन्धुआ तारिकाक आगौ-पाछौ
आठोथाक लेवा लेल बेहाल छलाह
स्थानीय कालेजक एकटा प्रोफेसर

दुपहर में—

युनिवर्सिटी लेक्चर विक्टर गन्ध
 आयोजित इस कोनो विचार-गोष्ठी
 जकर विषय ब्रह्म 'इमोजनल इन्टेंशन'
 बाहि में अध्वर्युता कण्ठ एकटा संस्कृत पंडित
 आ' उद्घाटन एकटा फिल्म निर्माता

राति में—

देखनि छलिअनि पंडितजी केँ
 टोस्टक सङ बाहक बुस्कीलैत
 पैदिकीजी भेटला सिंभने मे
 देखए आएल दूआ राजकपुरक 'सतरंगी तमाशा'
 सङ मे गृहणियो बलबिस
 आठिगन एहिरमे, लिपस्टिक लगओने
 आ' किदनि-किदनि पंडितजी सङे क्षुब्धते

— १०१ —

मनुस्वक

अस्तित्व

मनुस्वक अस्तित्व
 गँवर ने जेना कोनो डेंगी चाह
 आ' विहाडि पाथर ने गुटकल कोनो खोताक बिदे
 नालरि ओकों धर-धर-कैपैक जकर फोँड
 आ' अघर पर परिच्यस्त व्यथाक पातर रेल
 ताँसे पर ठाड़ अछि
 हाड बांसक ई शरीर
 एक्के नियम सँ तेषासित होइछ
 गरीब ओ अमीर
 निनगी नित चइइत अछि चिता मसान मे
 बलिक बकरा बिक सारिपहुँ मनुस्वक
 उच्च आदर्श जकर सिहित
 आत्म-बलिदान मे
 ओकर सफल कृतित्व
 युग युग सँ पीसल कुंटा ओ आकांक्षा
 रहि रहि कर उफनाइछ
 आ दर्प सँ पूर भए मनु सन्तान
 सदिखन डनगनाइछ
 (३१)

इएह बिचक ओकर उपलब्धि
आ' इएह ओकर परीहरि
आ' एकरे परतापेँ ओ लेपइ अछि दिन-राति
आ चढ़वे अछि पीतर पर निघोस लोगक पानि

— ० —

टहाटही इजोरिआ मे—

टहाटही इजोरिआ मे—
घाटी सन्ध अछि
मुदा अनेदुप ओ रहस्यमय मान
केवल साधकेँ टो जने अछि
सिन्धु ज्वारमे धरा पर पसरइ अछि
आ हृदय भर बाइछ
अनन्त प्रसार मे छोट-छोट द्वीप
.....
टहाटही इजोरिआ मे
जगत् प्रोदमासित अछि
आ गुप्तान्वित बीवही पर
बटोही अछि पथने कान

— ० —

शौर्य मे ककरो सँ उनैस नहि

सत्य ओ अहिंसाक पुजेगरी बिकहुँ हमरा लोकनि
मुदा तेँ शौर्य मे ककरो सँ उनैस नहि
शरीर सँ पातर लकलक होइतहुँ
आस्था हमर कुंठित नहि
गर्वादा ओ संस्कृतिक प्रतीक जेँ हम अनन्तकालहि स
तेँ नहि मेल अछि हमर विवेकक हास
हमर रस-कौशल ओ पराक्रमक गाथा
ओतत्रए पुरान अछि
जतेक हमर देशक इतिहास
हमर मशीनमन, मोर्टर्स, राइफल ओ रॉकेट-प्रक्षेपक
सभ किछु उनागर अछि
आ' हमर टैंक ओ आर्टिलरीक तोम्काँ
सभ किछु छान्गर अछि
के नहि जनैछ हमर कीर्तिशाली वैद्यक नाम
जकरा तोम्काँ सकल प्रयास बेकाम
पेटन टैंकक नोसि मुड़कैत
जे नोर्चा पर कएल महाप्रयाण
सरिपहुँ अपन जोर हमीदक खातिर

भारत के छैक गुमान
 हमर देश जानि गेल अछि
 जानि गेल अछि हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख ओ ईसाई
 हमर राष्ट्रीय एकता देखि कऽ
 ककर ककर ने टोर पर फुफ्फू पड़े छ
 आ' अकिल गेल छइ इबाइ
 भारतक एक-एक 'लाल'
 सरिपहुँ 'बहादुर' अछि
 मातृभूमिक रक्षा जकर मूलमंत्र
 आ' जे कहिओ सपनहुँ मे नहि भए सकेत
 बिसरिओ कए परतन्त्र—

— ० —

जवानकेँ सम्बोधित गृहिणीक दू आखर—

परम प्रिय प्राणनाथ नम्र एगारह सए तीस
 भेटि गेल भीषलंग टाकी गोरं बीस
 रेडिओ सँ सुनने छलहुँ अहाँक सनेस
 मलेठरी मे चल गेलाह बंगदू गनेस
 कहौंदि लड़ाई बेन्त भेलाक बादो
 लेल गेल अछि चलदूसि कैल सेव
 आ' लड़ीओ उचारि कए लाल काकी कहने छली
 जे फला केँ नहि लगलनि हेँ कुलोक कलेप
 टुमटुमो बजए हमहुँ पलटन में भरती हैव
 आ' बापूए जेकाँ टैंक ओ मशीनगन खैव
 तनने रहव बन्नुक पैदाएव नहि ध्यान
 अमर रहत हमर सोहाग जँ चलिओ जैत अहाँक जान
 माइओ दै छबि सपत तेँ रखबनि दुनक लाज
 देश रक्षा सँ बढ़ि कए दुनियाँ मे नहि दोसर भाज
 परसु सँ बाबी भए लेलनि अछि खाट
 पुत्रिओ घर छड़ाए गेल आ' लागि गेल टाट
 आएल छलथिन मौसरामनी मे छोटी दाइक बर

अनने बलवित तीन मरिक् अतरकी क छडइ
 गाए गेल बिहसि आ' महिस बिआए
 एकटा लुशीक बात जे हम सीखै छी निआए
 मोन होइए भाटा अदीडी खाए
 मरुआक रोटी, गरबुनीक ताग ते सड एकटा काँच मिरचाइ
 बाड़ी मे उपजल छल मकड़ दस तेर
 काटि कऽ कोदिआ सग लऽ गेल जनेर
 आइन मे कुनरइ अछि कीआ नित भोर
 अहाँ बिकहुँ गुड्डी आ हम बिकहुँ डोर
 कोइल स सँ आएल छल माछ दहीक भार
 उतारा देव जरदी बूझि एकरा तार
 आदा इति चन्द्रकला तारील पत्नीस
 पावथि जवान मधुबाला भा 'नभर एगारह सग तीस'

(पाकिस्तानी आक्रमण काल मे रचित ।)

—: ० :—

प्रयोगवादी

गमछा

ई बिक प्रयोगवादी गमछा
 साबिकक तीनी
 आ' पुस्तक लोकनिक धराउ
 सुदा आहुक प्रज्ञा-परिणत लोक एकरा
 लपेटे अछि डोंड मे
 आ' लपेटवा तँ पहिने
 जेँ चोपितव आंगष्ट नहि
 गरितक तेँ धोअएवा सँ पहिनहि एहिपर
 इस्वी चडवैत अछि
 हे देखि लिअ नव लोकक नव प्रयोग
 धोआ सजा कऽ
 पहिरवा सँ पहिनहि
 एकरा गोवरीड मे दोरि लेल
 आ' धोआए कऽ पहिरवाक प्राचीन परम्परा
 चूल्ह मे सोकाए गेल

—: ० :—

हिलकोर

भारत-नेपालक सीमान्तक गाम गथ
ओ कोनो दीप शिखा जेको अरइत छलि
अम तँ पलान्ति छलीक ओकर दुइ ओसि
आ' कोनो अज्ञात देशक अपरिचित गाथा मे
ओ बहुतो गप्प बजइत छलि
ओसि मे छलीक झाहरि
आ' गगनक नीलिमा
ओ केराक अद तँ हुलकी दैत भगवान भारतर
हम ओकरा देखि ने छलिअइ
लुत्ती राग दुपहरि मे
सीमान्तक गाम गथ
जाहि ठाम अम छैक
पलान्ति छैक
ओ छैक मुन्नर राँक
मुँझी भरि भात छैक
आ' गरल बाटी दासि
भरल आठन नाच छैक
आ' कंड भरल गीत

हम ओकरा देखि ने छलिअइ
ज्योतना-भलान फागुनक राति मे
मुता कउखन कर हमरा होइछ
ओ हम नहि देखिसिऐक
जेता हम किन्हु देखनहि ने होइ
आ' ई सभ हमर उद्मान्त कल्पनाहो

जय जवान

जय किसान

छुट्ट करल जवनीक कोर एहि विषम काल में लाल
 त्याग तपस्या सँ गौवल जे सह अस्तित्वक माल
 आदर्शक पाइल बलिदानी व्यापक जे व्यक्ति
 "ताराकन्द" केर उपलब्धि बिक जनिक अमर इतिव
 संकल्पक कुवेर जे मानव भारत नॉ केर पूत
 हिमिमिरि सन गम्भीर कला जे सन्निधुँ शान्तिक दूत
 गौतम, गौंधी आर जवाहर केर जे रत्नलनि टेक
 कएल उजागर धरती अथन मित्र वनील अनेक
 ताहि "बहादुर" मानव केँ अपित अदि अजा-भूल
 नहि बिगाड़ि सकलनि बनिकर किछु मदवा ओ दिक्कूल
 "जय जवान" ओ "जय किसान" केर स्वर परसल सभ आन
 लिखल रहत सोचक आखर मे शास्त्रीजी केर नाम
 लोकतंत्र केर रक्षा खातिर बिसरलाह नहि नीति
 परम्परा केर अनुगामी भारत केर अमर विभूति
 एकताक सन्देश अमर देए स्वयं मेला गुरधाम
 "लाल बहादुर" अमर भए मेला, विश्व करए गुणगान

(२०)

युगबोध



जीवक अदि
 जीवि लिअ
 जीवन रस पीवि लिअ
 तीव लागए
 भीड लागए
 कहुना कड
 कोरि लिअ

बकरा जे मोन होइ
 करए दिअउ
 कहए दिअउ
 बाजब तँ
 दुरि जैव
 बिरहो बसति मे
 रस्ते सँ घुड़ि जैव

बुद्धि बढ़ल रॉकेट पर
 भावना पञ्चआएल
 नीति ओ अनीति मध्य
 किया मोतिआएल

(२१)

झोर नहि झोर नहि

सब किछु निपत्ता

सत्तरल जाइछु डेग मुदा

सोझौं मे खत्ता

नाहि आ जितगीक

इएह थीक लघुका

भावनाक सुष्ठ पर

अंकित अनाम्यथा

झरझर अछि मील केर

बम्मा अनधोल

विजुलिक इज्जत मे

चक्रमक अछि टोल

पंखाक हवा मे

तेराए गेल चाह

विचारक प्रवाह मे

मोन हुसिताह

बदलि गेल मुग

मुदा पुरनके अछि तान

मिलोठने छुधि पञ्चिआर

भरि मूह पान

कोइलाक सम्भता मे

नवल धवल वस्त्र

सून बाबय बाबाक

कहवा सए अस्थ

मुग अछि प्रयोगक

विज्ञानक सवदास

नव गान्धताक सड

बदल मनक पास

कोन थीक टलहा

ओ कोन थीक तोम

मुग सन्धिक चौबटौ पर

उकुआएल मोन

अतृप्त आकांक्षा

ओ कुंठाक राज

मौलिक उपलब्धि थीक

जीवन केर साज

पछुता बसात मे

मोन गेल चोर

मथि गेल गर्दै सौं

आँखि कात ठारे

गुनैत रह धुनैत रह

पूर्वक इतिहास

आधुनिक सम्भता तौ

टेकल अकास

झगट बिगड़ किन्तु नहि
मात्र दृष्टि-दोष
बुधक सड़ बदलि गेल
अथै शब्दकोष

जीवक अडि
जीवि लिअ
जीवन रस पीवि लिअ
सीत लागए
सीठ लागए
झुना अऽ
बोटि लिअऽ

बकरा जे गोन होइ
कहए दिअ
करए दिअउ
बाजब तँ
दूरि जैव
धिरडो बसात मे
रस्ते तँ दूरि जैव

बुझि चढ़ल रोकैठ पर
भावना पहुँचाएल
नीति ओ अनीति मध्य

किया भोतिआएल
ओर नहि छोर नहि
सब किछु निषद्या
ससरल जाइछ डेग मुदा
सोभौ मे सचा

— ० —

बारह वर्षक बाद सासुर यात्रा

बारह वर्षक बाद पुनः हम नई छतहूँ बैसास
नव धरातल नव सिंग मे देखल नव प्रकाश
बहुत छल उगटा बसात चहुँदिग बेहाल छल लोक
पुकोनोट नहि सामी आश्रम हरे, विषाद न शोक
भित्ता सँ पीअर कपेस भए भेल छलाह सतर
मुह बिधुअओने सासु छली चहुँआ पर नुमइल सूर
सरहोजिक मुटु मे बान्हल देखल सारक टीक
अकबक किछु नहि तुलन्हि हुनका ओटने जारथ बीच
'महवा' टेलह भेल सरबेटा अहरी तीनु नाइ
'तुनु' 'बीनु' आओर 'नीनु' देखितहि भेल पड़ाइ
भेल लोटल छल दरवजा पर कोचरा पर ओहीन
साविक केर आबन सँ पवित्रन सारक धर छल मोन
नया जमाना नया लोक केर चिकन-चुनमुन नात
छिटकावैत बर्तीगी देखल विनु ऐनिथ राव भात
आवेसी सरहोजे न कतहु आर न भेटलि सारि
'हली माइबिअर' 'ओ० के० मिटर' नवका दुग केर गारि
उगटापछा करे देखल रखने किल्ली चूल्
कादिगन ओ शॉल दुनइ छलि 'लंग' 'अरीची' 'फूल'

मेकअप सँ पहन सन कम जे शूटिंग सए तैआर
कोरो गनिगनि बुलहा लोकनि टोकल अपन बपार
अधल काठ साइद जे कीड़ा कहुना नहि परकार
सासुक उपर झिड़कत देखल पुतहु के फुत्कार
छालही चूड़ा भेल अलोपित भाव टोरल ओ चाह
विनु वजने सेहो नहि भेटत मुखले रहव दिथाइ
शाम मुडयु पुरना जमाए, नवका टटाधु दिन राति
अनट दिनट जे किछुओ बजता सएबो करता लात
भए गेल बर समक अवमूल्यन डेग-डेग पर दाओ
एहि गहगी मे बटल जाइत अछि आपकता बेर भाओ

गुग्गुलु मेल

ठाढ़ छी

वसन्त

गुग्गुलु मेल ठाढ़ छी
नकरमपुरक चौवड़ी पर
चुनवड़ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

पढ़वा लय जाइत अछि
हैंव बाहि तटिआ
आ' गुड़गुड़ाइ सकुरी सँ
आएल फटफटिआ

ताहि पर सवार छथि
नव घर-कनियों
गुड़लदी घोड़ी पर
चढ़ल अछि बनिआँ

पीत-वसना कनियोंक
जालीदार दोपट्टा
कुमि रहल पतझड़ मे
सगर परोपट्टा

(४८)

(४९)

साविक मे जनीयातक
एक मुट्ठी खोपा
आव नैं डेगे डेग
तपोवनी खोपा

ताविक मे लोक पहिरए
मिरजइ ओ' चपकन
आधुनिक लोक के 'छे न पाइव' 'टी शर्ट'
बूढ़ि गाएक धंटी तन 'ट्रांजिस्टर' लटकन

गुग्गुलु मेल ठाढ़ छी
नकरमपुरक चौवड़ी पर
चुनवड़ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

ग्रीष्म

गुग्गुलु मेल ठाढ़ छी
बिरसाइरक पाकविलर
चुनवड़ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

लुत्ती सन दुपहरि मे
मोन अछि घोर
भवि गेल नद सँ
जोकि नद सँ

आगिक मोल करैल
कीनइ छपि पीसा
ककरो नहि अवइत छै
वरिसाइतक सीसा

डलडाक सोहारीमे
देह ठेढ़ बकुला
विष्णु ओ कलमी मे
लुबधल अछि टिकुला
कलजुगही कनठिरवी
करैए अकइइ
कोइली तैं पूछइ छइ
'हमर विआर कोमहर'

टेक मे लागि गेल
भकड़ाक जाला
दन दन अछि सन्नुक
आ लटकल आछ ताला
गुम्म भेल ठाढ़ छी
बिरसाइक पाकड़ितर
चुनवइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

वर्षा

गुम्म भेल ठाढ़ छी
महेन्द्रघाटक जटी पर
चुनवइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

भीजि गेलनि मौसिक
सज्जल तिन पढ़िआ
मीड़ मे पचकि गेलनि
मागीक अदि था

टिकत बावूक जुता मे
सन्हिआएल बैग
परसू तैं गाढ़ी नहि
जाइत अछि 'हेंग'

सति पड़ला घुटर भा
पाछौं दू कौड़ी
आहिरे बा भीजिगेल
तीसी अदीदी

गुम्म भेल ठाढ़ छी
महेन्द्र घाटक जटी पर
चुनवइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

(५२)

शरद

गुम भेल ठाढ़ छी
मेहथू पाटक छहर पर
चुनवइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

ठुडा विपरक भौंक मे
दधलक अझि नीलफंट
कोइलाक सम्बता मे
चारू सात लठे लठ

मुकुन बाबू दोकान मे
भेटता नटि रैची
रुचिगर लगैत अझि
डोबहीक मैची

परधू तँ एहिठाम
लागत बेसाइ
तुक पर मंभारपुर मे
पावरोटी चाह

गुम भेल ठाढ़ छी
मेहथू पाटक छहर पर
चुनवइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

— ० —

(५३)

हेमन्त

गुम भेल ठाढ़ छी
लोहना रोड टीसन पर
चुनवइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

मोटरी सम्हराइ छथि
बुरहा ओ बुरही
मोसाफिरखाना मे
झिझिआएल अझि मुरही

आँजुरक आँजुर
दोलडीक धान
बहिकिरनी हमर
गिलोटेने अझि धान

बिसरि गेल धियाभुला
“साते ओ भवतू”
बबो आब पौत्र केँ
सिखवइ छथि “वन-टू”

प्लारिस्टक फूल धीक
टेनुल केर शान
बदलि गेल रागरड
बदलि गेल तान

गुम भेल ठाढ़ छी
लोहना रोड टीसन पर
चुनवइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

h
w

TABLE

गुम्म मेल ठाढ़ छी
लाल मौजिक मुहथरिलग
चुनवइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

गूड़-चूड़ा मिचराकऽ
फाँकइ इधि सरपच
बगड़ा सम खोता मे
मुटकल अछि संचनच

बाबा केँ होइतइनि
एक सलगाक जाइ
बाबीकेँ धेलकनि
मलेरिआ थोखार

बीस सन बात बाजए
पाच भरिक जीत
आहिरे वा गुमतरिल
कोचीक सुखीत

बुढिआक फूँसि बीक
मौजिक मोर
भेआ केँ मनपैत
मऽमेलनि मोर

गुम्म मेल ठाढ़ छी
लाल मौजिक मुहथरि लग
चुनवइ छी तमाकू
आ देखइ छी तमाशा